IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियो की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

डॉ. पूनम देवी (असि. प्रो.)

जुहारी देवी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज, कानपुर

Abstract: शिक्षा समाज को विकसित एवं कल्याणकारी संस्था के रूप में परिवर्तित करने का कार्य करती है यदि इसका क्रियान्वयन बौद्धिक स्तर से उच्च व्यक्ति के हाथ में हो। विद्यालयी शिक्षा बालक के जीवन में औपचारिक शिक्षा के साथ प्रारम्भ होती है। जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ता जाता है बालक के ज्ञान अर्जन की क्षमता का भी विकास होता जाता है। प्रस्तुत शोध में हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ होने वाली शैक्षिक चिंता का अध्ययन शोधार्थिनी द्वारा किया गया है। न्यादर्श के रूप में प्रयागराज शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 170 विद्यार्थियों का चयन लिंग के आधार पर यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। आंकड़ों के संग्रह हेतु डा0 ए0.के0 सिंह एवं डा0 सेनगुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक चिंता मापनी का प्रयोग किया गया विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन उनके हाईस्कूल के अंक पत्र द्वारा किया गया। प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के तीन स्तर उच्च औसत व निम्न स्तर पाये गये एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर उनकी शैक्षिक चिंता का सार्थक प्रभाव पाया गया।

प्रस्तावना:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है लेकिन यह सामाजिक भावना उसके जन्म से उत्पन्न होती है। बालक में सामाजिक भावना का विकास उसके परिवार, पास-पडोस एवं विद्यालय के माध्यम से उत्पन्न होती है। परिवार एवं पास-पडोस के द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे समाजशास्त्रीय भाषा में अनौपचारिक ज्ञान कहते है। औपचारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये बालक को विद्यालय में प्रवेश करना पडता विद्यालयी शिक्षा के माध्यम से वह समाज की संस्कृति एवं व्यवहार से परिचित होता है शिक्षा का औपचारिक माध्यम बालक के भविष्य को भी सुनिश्चित करता है किन्तु बदलते परिवेश और आधुनिकता ने शिक्षा के स्तर को प्रतिस्पर्धात्मक रूप प्रदान कर दिया है जिसके कारण बालकों में कई मनोशारीरिक समस्याओं को जन्म दिया है जिससे बालक की शैक्षिक चिंता का स्तर भी बढ़ता जा रहा है, जो उसके शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करता है तथा उसमें कुसमायोजन की भावना भी विकसित करती है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व: मनुष्य जब जन्म लेता है तो वह एक जैविक प्राणी होता है। समाज के सम्पर्क में आते ही वह सामाजिक गतिविधियों में सम्मिलित होने लगता है, उनमें से कुछ घटनाएँ उसको प्रभावित करती है। इसी प्रकार जब वह अपनी शैक्षिक विकास हेतु विद्यालय में प्रवेश लेता है तो वहाँ का वातावरण वह अपने घर के वातावरण से भिन्न पाता है उनमें से कुछ तो उस वातावरण में जल्दी समायोजित हो जाते हैं और कुछ उसी वातावरण में अपने मन में डर, भय, चिंता जैसे भावों को जन्म देते हैं। भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में कक्षा-10 पहली कक्षा होती है जिसमें विद्यार्थियों की कापियाँ विद्यालय के शिक्षकों द्वारा न जाँचकर अन्य शिक्षकों के द्वारा जाँची जाती हैं, जो विद्यार्थियों के मन में भय चिन्ता जैसे भावों को जन्म देती हैं जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि बाधित होती है।

समस्या कथन: हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियो की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण:

शैक्षिक चिंता : शैक्षिक चिंता से तात्पर्य शिक्षा से जुड़ी ऐसी गतिविधियों से होता है जिनसे शिक्षार्थी के मन में भय, चिंता आदि भावनाएं उत्पन्न होती हैं, जिनसे विद्यार्थी दूर भागना चाहता है, जिससे उनका विकास बाधित होता है।

शैक्षिक उपलब्धि: शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य यह होता है कि किसी विद्यार्थी, शिक्षक या शिक्षण संस्था ने अपने शैक्षिक लक्ष्यों को किस सीमा तक प्राप्त किया है। प्रस्तुत शोध में हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का आंकलन किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता द्वारा निम्न उद्देश्यों को लिया गया है।

1- हाईस्कूल स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक चिंता के स्तरों का अध्ययन करना।
2- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में उच्च शैक्षिक चिंता वाले छात्र-छात्राओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
3- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में औसत शैक्षिक चिंता वाले छात्र-छात्राओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों में निम्न शैक्षिक चिंता वाले छात्र-छात्राओं का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना:

1- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं की उच्च स्तर की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

3- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं औसत स्तर की शैक्षिक चिंतन का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

4- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं की निम्न स्तर की शैक्षिक चिंता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सीमांकन: प्रस्तुत शोध कार्य में प्रयागराज शहर के कक्षा-10 के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण:

jena (2024) Academic Anxiety and Achivement in Scince of Higher Secondary School Student

शोध के उद्देश्य:

1- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की विज्ञान में शैक्षिक चिंता एवं उपलब्धि के स्तर का लिंग के संन्दर्भ में पता लगाना।

2- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की विज्ञान में शैक्षिक चिंता एवं उपलब्धि के बीच सम्बन्ध का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध में सर्वे शोध विधि का प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध में 120 विद्यार्थियों का चयन लिंग के आधार पर जिसमें 60 बालकों एवं 60 बालिकाओं का चयन सादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के संकलन हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया।

1- शैक्षकि चिंता का मापन हेतु शोधकर्ता द्वारा डॉ० ए0के0 सिंह एवं डॉ० ए0 सेनगुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक दुश्चिंता मापनी का प्रयोग किया गया।

2- प्रत्येक विद्यार्थियों के Second term Examination में प्राप्त विज्ञान के अंकों को विद्यालय के रिकार्ड रजिस्टर से लिया गया।

शोधकर्ता द्वारा अध्ययन के निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता (लिंग के संदर्भ में) में सार्थक अन्तर पाया गया। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं में शैक्षिक चिंता का स्तर अधिक पाया गया।

2- उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में विज्ञान में उपलब्धि के बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

3- शैक्षिक चिंता एवं विज्ञान उपलब्धि के मध्य निम्न धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

बेहरा एवं पगन (2022) शैक्षिक उपलब्धि पर दुश्चिंता की भूमिका नामक शोधकार्य किया गया प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य विद्यालय के वातावरण के सम्बन्ध में माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों शैक्षिक चिंता का विश्लेषण करना माध्यमिक विद्यालय के बालक और बालिकाओं की शैक्षिक चिंता की तुलना करना एवं सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक दुश्चिंता की तुलना करना।

प्रस्तुत शोध निष्कर्ष में माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया, बालिकाओं की शैक्षिक दुश्चिंता की अपेक्षाकृत बालकों की शैक्षिक दुश्चिंता से ज्यादा पायी गयी।

शोध विधि: प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या: प्रस्तुत शोध कार्य में प्रयागराज शहर में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श: प्रस्तुत शोधकार्य में प्रयागराज शहर में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा-10 में अध्ययनरत् 170 विद्यार्थियों का चयन लिंग के आधार पर यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा किया गया।

उपकरण: प्रस्तुंत शोधकार्य में आंकड़ों के संग्रह हेतु निम्न उपकरण का प्रयोग किया गया है।

1- शैक्षिक चिंता का मापन करने के लिये शोधार्थिनी द्वारा डॉ० ए0के0 सिंह एवं डॉ० सेनगुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक चिंता मापनी का प्रयोग किया गया है।
2- शैक्षिक उपलब्धि का मापन विद्यार्थियों के हाईस्कूल (कक्षा-10) के अंक पत्र के माध्यम से किया गया है।

परिणाम एवं विश्लेषण:

प्रस्तुत शोध में प्राप्त आंकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण करने के उपरान्त निम्न परिणाम प्राप्त हुए।

सारणी क्रमांक 1.0

विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के स्तर के सन्दर्भ में विद्यार्थियों की संख्या

क्रम स०	शैक्षिक चिंता के स्तर	छात्र	छात्राए	योग
1	उच्च शैक्षिक चिंता	20	20	40
2	औसत शैक्षिक चिंता	45	40	85
3	निम्न शैक्षिक चिंता	25	20	45
				170

सारणी क्रमांक 1.1

उच्च शैक्षिक चिंता के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

क्र0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान त्रुटि	टी. परीक्षण
1	छात्र	20	70.34	6.86	1.53	3.28
2	छात्राएँ	20	63.70	5.51	1.23	

df=38 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान =2.02

सारणी क्रमांक 1.2

औसत शैक्षिक चिंता के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

क्र0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान त्रुटि	टी. परीक्षण
1	छात्र	45	61.76	5.48	.82	1.45
2	छात्राएँ	40	63.28	4.04	.64	

df=83 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान =1.98

सारणी क्रमांक 1.3

निम्न शैक्षिक चिंता के छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन

क्र0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान त्रुटि	टी. परीक्षण
1	छात्र	25	61.34	5.92	1.18	3.83
2	छात्राएँ	20	67.78	5.12	1.14	

df=43 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान =2.00

निष्कर्ष :

1- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक चिंता के स्तरों में सार्थक अंतर पाया गया।

2- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् उच्च शैक्षिक चिंता स्तर वाले छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

3- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् औसत शैक्षिक चिंता स्तर वाले छात्र-छात्राओं में शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

4- हाईस्कूल स्तर पर अध्ययनरत् निम्न शैक्षिक चिंता स्तर वाले छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

i- मंगल एस० के० शिक्षा मनोविज्ञान (२०1०) पी०एच० आई० लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड नयी दिल्ली 11001

ii- सिंह अरुण कुमार, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ मोतीलाल बनारसीदास 41 यू. ए. बंगलो रोड़ जवाहर नगर दिल्ली 110007

iii- www.irjhis.com

iv- www.humantiesjournal.com